माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
Hindi	4 0 1	English

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

B-23 3"33926

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 1 3 5 3 4 9 2 7 7 -

शब्दों में: one three Five three Four nine Two seven seven -

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें

प्रश्न पत्र का सेट A

क :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 41

ख :- परीक्षा का दिनांक 01 | 03 | 2023

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

HIGH SCHOOL EXAMINATION Year - 2023

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Dimple Bhopale	केन्द्राध्यक्ष C. No. 532322

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
S.K.DESHMUKH V.NO.- 30623 आई.पी. सो V.No.-3957	V.N

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

Previous Pathshala

②

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 1 के उत्तर

(i) (अ) भूषण

(ii) (स) विनय पत्रिका

(iii) (द) वात्सल्य

(iv) (द) कबीर

(v) (ब) रीतिवाचक

(vi) (स) अभूत का

प्रश्न क्रमांक 2 के उत्तर

(i) वल्लभाचार्य

(ii) 16

(iii) 2

(iv) मोतीलाल

(v) 3

(vi) केंचुल जंघा।

Previous Pathshala

3

योग

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 3 के उत्तर

	(क)	(ख)
(i)	कामायनी	जयशंकर प्रसाद
(ii)	मानवी क्रियाओं का आरोप	मानवीकरण
(iii)	गद्य की प्रमुख विधाएँ	निबंध
(iv)	लखनवी अंदाज़	यशपाल
(v)	अंधे की लाठी	एक मात्र सहारा
	मैं क्यों लिखता हूँ	अज्ञेय

प्रश्न क्रमांक 4 के उत्तर

(i) केशों से [काले घुँघराले बालों से]

(ii) चार [विभाव , अनुभाव , स्थायीभाव , संचारी भाव]

(iii) रेखाचित्र , च संस्मरण , यात्रा वृत्तांत

(iv) छः [अव्ययीभाव , कर्मधारय , तत्पुरुष , द्वंद , द्विगु , बहुव्रीहि]

4

प्रश्न क्र.

(v) आवश्यक वस्तु की कमी

[किसी वस्तु के लालच में अनेक लोगों द्वारा बहाने करना]

~~(आवश्यक वस्तु की कमी)~~

) 500 [पाँच सौ]

प्रश्न क्रमांक 5 के उत्तर

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

(vi) असत्य

प्रश्न क्रमांक 6 का उत्तर (अथवा)

रीतिकाल की विशेषताएँ / प्रवृत्तियाँ –

i. लक्षण ग्रंथों की रचनाएँ की गई हैं।

ii. मुक्तक काव्य रचनाएँ भी हुई हैं।

i. ब्रजभाषा में रचनाएँ की गई हैं।

BSE
Previous Pathshala

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 7 का उत्तर

सूरदास -

i. दो रचनाएँ : सूरसागर , सूर सारावली , साहित्य लहरी

ii. भावपक्ष : सूरदास जी की रचनाओं में उनके श्री कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम मिलता है। उन्होंने श्री कृष्ण की भक्ति साख्य भाव से की है। उनकी रचनाओं में वात्सल्य की प्रधानता मिलती है। वात्सल्य का कोई सा भी पक्ष उनसे अछूता नहीं है। गोपियों का प्रेम और विरह आकर्षक है।

प्रश्न क्रमांक 8 का उत्तर

कवि जयशंकर प्रसाद आत्मकथा लिखने से बचना चाह रहे हैं क्योंकि उनका जीवन कष्टों से भरा हुआ है वह उन कष्टों की पीड़ा अब शाँत हो गई है। वे लिखकर इन पीड़ाओं को कुरेदना नहीं चाहते हैं। वे अपने जीवन को खाली गागर की तरह रिक्त मानते हैं। वे मानते हैं कि उनके जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे लिखा जा सके। इसके अलावा वे कहते हैं कि वे आत्मकथा लिखकर अपना उपहास नहीं कराना चाहते हैं। इन्हीं कारणों से वे आत्मकथा लिखने से बचना चाहते हैं।

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 9 का उत्तर

कवि निराला बादलों को गरज - गरज कर बरसने के लिए कहता है। वह कहता है कि बादलों की गर्जना से मनुष्य के मन में उत्साह, उमंग तथा उत्तेजना का भाव जागृत होगा। वे बादलों को क्रांति लाने में सक्षम मानते हैं। बादल मनुष्य में क्रांति तथा चेतना का संचार करेगा। इसी चेतनापूर्ण जोश, उत्साह और क्रांति को ध्यान में रखकर ही कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है। जो अत्यंत सार्थक है।

प्रश्न क्रमांक 10 का उत्तर [अथवा]

श्रृंगार रस – काव्य में जहाँ नायक - नायिका का वर्णन होता है वहाँ श्रृंगार रस होता है।

जब रति नामक स्थायीभाव का विभाव, अनुभाव, संचारीभाव से संयोग होता तब वहाँ श्रृंगार रस होता है।

उदा. राम को रूप निहारती जानकी कंगन के नग की परछाई।
याते सबै सुधि भूल गई कर टेकी रही पल टारत नाहीं ॥

यहाँ राम और सीता के प्रेम का वर्णन होने के कारण श्रृंगार रस है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 11 का उत्तर [अथवा]

अन्योक्ति अलंकार - जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो अर्थात जहाँ बातें प्रत्यक्ष रूप से न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से कही जाती है वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

माली आवत देखकर, कलियन करि पुकारि।
फूले - फूले चुन लिए, कल्हि हमारि बारि॥

प्रश्न क्रमांक 12 का उत्तर

कहानी और उपन्यास में अंतर

कहानी	उपन्यास
i. कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होती है।	i. उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक होती है।
ii. कहानी के कथावस्तु में घनत्व होता है।	ii. ~~कहानी~~ के उपन्यास का कथावस्तु विस्तृत होता है।
iii. कहानी को एक बैठक में भी पढ़ा जा सकता है।	iii. उपन्यास को पढ़ने में कई दिन, हफ्ते लग जाते हैं।
उदा. प्रेमचंद - बूढ़ी काकी	iv. उदा. प्रेमचंद - गोदान

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 13 का उत्तर

यशपाल -

i. दो रचनाएँ - ज्ञान दान, तर्क का तूफ़ान, झूठ-सच।

ii. भाषा शैली - यशपाल जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक भाषा है जिसमें तत्सम - तद्भव शब्द का उपयोग हुआ है। कहीं-कहीं उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। भाषा की सजीवता तथा स्वाभाविकता उनकी व्यक्तिगत विशेषता है। उन्होंने कहीं-कहीं व्यंग्य का प्रयोग भी किया है। उनकी रचनाओं में आम आदमी के सरोकारों की उपस्थिति है।

प्रश्न क्रमांक 14 का उत्तर [अथवा]

भटियारखाना का शाब्दिक अर्थ है - (i.) जहाँ हमेशा भट्टी जलती रहे और (ii.) जहाँ शोर - गुल हो। लेखिका के पिता का मानना था कि भटियारखाने में लड़कियों की प्रतिभा और क्षमता शोर-गुल में तथा जल कर नष्ट हो जाती है। पाककला और आस्वादन में ही उनका जीवन नष्ट होता है। उनकी क्षमता और प्रतिभा का सही उपयोग नहीं हो पाता। इसलिए लेखिका के पिता रसोई घर को भटियारखाना कहकर संबोधित कर रहे हैं।

Previous Pathshala

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 15 का उत्तर

शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किया जाता है। इसका कारण यह है कि यहाँ पर बिस्मिल्लाह खाँ यानी अमीरुद्दीन का जन्म हुआ। शहनाई को बजाने के लिए रीड का प्रयोग किया जाता है जो अंदर से पोली होती है। यह रीड एक प्रकार की नरकट घास से बनाई जाती है जो प्रायः सोन नदी के तट पर पाई जाती है। इसके अलावा बिस्मिल्लाह खाँ के परदादा सलार हुसैन खाँ भी यहीं के निवासी रहे हैं। इन्हीं कारणों से शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किया जाता है।

प्रश्न क्रमांक 16 का उत्तर

i. खून-पसीना एक करना - [कठिन श्रम करना]

वाक्य:- राजू के पिता ने खून-पसीना एक कर उसके लिए घर बनवाया है।

ii. दाल न गलना - [कार्य न होना]

वाक्य:- राम ने सच का पता लगाने के लिए अनेक प्रयास किये किंतु उसकी दाल नहीं गली।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 17 का उत्तर [अथवा]

लेखक के अनुसार उसे समास समाचार-पत्रों के माध्यम से हिरोशिमा में हुए अणु बम विस्फोट की जानकारी थी। जब उसे वहाँ जाने का मौका मिला तो वह वहाँ के अस्पताल में गया जहाँ अणु विस्फोट से प्रभावित लोग दर्द में तड़प रहे थे परंतु तब भी लेखक को अनुभूति नहीं हुई। एक दिन ऐसे ही रास्ते पर चलते चलते हुए उन्होंने एक जला हुआ पत्थर देखा जिस पर लंबी उजली छाया अंकित थी - विस्फोट के समय पर वहाँ कोई खड़ा रहा होगा जब अणु बम फटा तो उसकी किरणें आस-पास से आगे निकल गई होंगी और पत्थर को झुलसा दिया होगा जो मानव उसके सामने आया होगा उसमें यह किरणें रुद्ध हो गई होंगी और उसे भाप बना दिया होगा। इस तरह जो समूची कथा पत्थर पर थी वह लेखक के सामने घटित हो गई। इस तरह लेखक हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

न क्र.

प्रश्न क्रमांक 18 का उत्तर

हमारैं हरि ------------------------ चकरी।

संदर्भ: यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-२' के 'सूर के पद' से ली गई है जो लिए गए लिया गया है जो कि 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' में संकलित हैं। इसके कवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग: इस पद्यांश के माध्यम से गोपियों ने श्री कृष्ण के प्रति अपना एकनिष्ठ प्रेम दिखाया है। वे योग की तुलना को कड़वी-ककड़ी के समान बताती हैं जिसे खाया नहीं जाता।

व्याख्या: इस पद्यांश में गोपियाँ श्री कृष्ण के प्रति अपना प्रेम उजागर करते हुए उन्हें हारिल की लकड़ी के समान बताती हैं। जिसे उन्होंने मन-क्रम-वचन से पकड़ा हुआ है। वे कहती हैं कि उनके मन में श्रीकृष्ण बस गए हैं। वे जागते हुए, सोते हुए, सपने में, दिन में, रात में केवल उन्हीं का नाम जपा करती हैं। उन्हें श्रीकृष्ण के की तुलना में योग कड़वी-ककड़ी के समान त्यज्य लगता है। वे उद्धव से स्पष्ट कहती हैं कि तुम हमारे लिए कैसा रोग ले आए हो, हम इसे कैसे अपना सकते हैं क्योंकि इसके बारे में हमने न सुना, न देखा है। यह योग संदेश तो केवल उन लोगों को स्वीकार हो सकता है जिनके मन चकरी की तरह घुमते हैं।

प्रश्न क्र.

१. गोपियों के प्रेम की एकनिष्ठता प्रकट की है।
ii. अनुप्रास , पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
iii. शुद्ध साहित्यिक ब्रज भाषा है।

प्रश्न क्रमांक 19 का उत्तर

मूर्ति संगमरमर ---------- प्रयास था।

संदर्भ - यह गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' के पाठ 'नेताजी का चश्मा' से लिया गया है। इसके लेखक स्वयं प्रकाश हैं।

प्रसंग - इस गद्यांश में लेखक ने मूर्ति की बनावट तथा उसके बाह्य स्वरूप का चित्रण किया है।

व्याख्या - हालदार साहब बताते हैं कि मूर्ति संगमरमर की थी। वे इस बात को आगे बढ़ाकर कहते हैं कि वह मूर्ति ज्यादा बड़ी न थी टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक दो फुट की थी। ऐसी मूर्ति को बस्ट कहा जाता है। वह मूर्ति सुंदर थी। वह मूर्ति नेताजी सुभाष चंद्र बोस की थी, वे सुंदर लग रहे थे। जो कि फौजी वर्दी में थे। उस मूर्ति को देखकर व्यक्ति के मानस पटल पर उनके सुप्रसिद्ध नारों की गूँज सुनाई देने लगती है।

प्रश्न क्र.

लोगों में स्वाधीनता की चेतना जगाने के हिसाब से यह एक सराहनीय प्रयास था।

विशेष
i. शुद्द साहित्यिक भाषा है।
ii. तत्सम और तद्भव शब्दों का उचित समावेश है।
iii. 'बस्ट' जैसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी है।

प्रश्न क्रमांक २० का उत्तर [अथवा]

बढ़ती महंगाई के संबंध में ग्राहक और किराना दुकान के मालिक के मध्य संवाद –

- ग्राहक – और सेठ! एक किलो चीनी का भाव कितना है।
- मालिक – 150 रू प्रति किलो।
- ग्राहक – (चौंककर) अरे! अभी कुछ समय पहले तक 90 रू प्रति किलो।
- मालिक – अब क्या करें भाई आजकल महँगाई ही इतनी बढ़ती जा रही है इसमें हमारा क्या दोष है!?
- ग्राहक – हाँ सेठ! यह बात तो तुम्हारी सही है पर इतनी महँगाई में तो संरक्षण बहुत कठिन होगा।

BSE
Previous Pathshala

DUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRAD

प्रश्न क्र.

• मालिक – अरे भाई तुम अपना तो छोड़ो गरीब लोगों के लिए तो अब पेट भरने के भी लाले हैं।

• ग्राहक – अब हमारे हाथ में कुछ है भी तो नहीं जिससे महँगाई पर रोक लगाई जा सके।

• मालिक – हाँ अब तो सरकार ही कर सकती है जो इस बढ़ती पर महँगाई पर नियंत्रण।

…हक – चलो भाई। यह लो 75 रु और आधा किलो चीनी ही दे दो।

प्रश्न क्रमांक 21 के उत्तर

…द्यांश का उचित शीर्षक "निराशावादी नहीं आशावादी …बनो" ही है।

…ब लक्ष्य बहुत दूर होता है, लक्ष्य प्राप्ति प्राप्ति …र संशय होता है। अनेक प्रयास असफल …होने के बाद ही निराशा का भाव जाग्रत …होता है।

…न में आशा का भाव बनाए रखना चाहिए …योंकि आशा ही हमें विपरीत परिस्थितियों में …। लक्ष्य प्राप्ति में सक्षम बनाती है।

प्रश्न क्रमांक २२ का उत्तर

सेवा में,

अध्यक्ष महोदय,
नगर पालिका निगम,
इंदौर [म॰प्र॰]

विषय - मोहल्ले की नियमित सफाई के संबंध में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं नेहरू नगर क्षेत्र का रहवासी हूँ। आज इंदौर भारत का स्वच्छतम शहर बन चुका है परंतु हमारे क्षेत्र में अभी स्वच्छता से जुड़ी अनेक समस्याएँ हैं। यहाँ नियमित सफाई नहीं होती। सड़क पर तीन-तीन दिनतक कचरा पड़ा रहता है। नाली में [illegible] न होने के कारण पानी सड़कों पर आने [illegible] है। कचरा गाड़ी भी नियमित नहीं आती है।

अतः आशा करता हूँ कि महोदय आप इस दिशा [illegible] त्वरित कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद।

[illegible] 01/03/२०२३

प्रार्थी
अ.ब.स.

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक २३ का उत्तर

1. पर्यावरण प्रदुषण

रूपरेखा - 1. प्रस्तावना
2. पर्यावरण प्रदुषण से अभिप्राय
3. प्रदुषण के प्रकार
4. प्रदुषण निराकरण
5. उपसंहार

1. प्रस्तावना - आज विश्व में प्रदुषण बढ़ता जा रहा है। आज का मानव आमोद-प्रमोद तथा भोग विलास में व्यस्त है। अपनी सुख सुविधाओं की वृद्धि की सनक में वह प्राकृतिक संपदाओं का निरंतर दहन करता हुआ चला आ रहा है। वृक्ष काटे जा रहे हैं, हरियाली नष्ट की जा रही है और यही कारण है कि आज मानव शुद्ध हवा के लिए भी तड़प रहा है। आज आकाश विषाक्त तथा जल जानलेवा बन गया है।

२. पर्यावरण प्रदुषण से अभिप्राय - सामान्य रूप से वे समग्र कारण जो भौतिक, रसायनिक एवं जैविक रूप से धरती में हानिकारक परिवर्तन लाते हैं मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाते हैं प्रदुषण के मुख्य कारण हैं। जब नदी, तालब, पहाड़,

प्रश्न क्र.

वृक्ष आदि तत्वों की भौतिक तथा वास्तविक स्थिति में परिवर्तन आता है तब प्रदुषण जन्म लेता है।

3. प्रदुषण के प्रकार - प्रदुषण के मुख्यतः 3 प्रकार होते हैं - (क) जल प्रदुषण
(ख) वायु प्रदुषण
(ग) भूमि प्रदुषण

(क) जल प्रदुषण - जल प्रदुषण से अभिप्राय जल में होने वाले प्रदुषण से है। इसका मुख्य कारण कारखानों तथा रासायनिक प्रयोगशालाओं से निकलने वाला रसायन है। जल से अनेक रोग भी संक्रमित होने लगे हैं।

(ख) वायु प्रदुषण - कारखानों तथा वाहनों से 24 घण्टे धुआँ निकला करता है। यह धुआँ मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है तथा कहीं जगह अम्ल वर्षा का कारण भी होता है।

(ग) भूमि प्रदुषण - रासायनिक खादों तथा प्लास्टिक के कारण जब भूमि प्रदूषित होती है तब उसे भूमि प्रदुषण कहते हैं।

5. प्रदुषण निराकरण - समय की महती आवश्यकता है कि प्रदुषणकारी तत्वों पर अंकुश लगाया जाए। इसके लिए भारत सरकार द्वारा जल संरक्षण अधिनियम पहले ही लागू किया जा चुका है।

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

जिसके तहत कारखानों के स्वामियों से यह शर्त रखी गई की वे अपने कारखानों से निकलने वाले कुचरे का उचित प्रबंध करेंगे। हमें प्रदुषण को रोकने के लिए ज्यादा से ज्यादा वृक्षों का रोपण करना चाहिए तथा उनका बच्चों की तरह पालन करना चाहिए।

5. उपसंहार – प्रदुषण की समस्या राष्ट्र विशेष की न होकर संपूर्ण विश्व की समस्या है। इससे निपटने के लिए संपूर्ण विश्व को एकजुट होकर प्रयास करना होगा। इसका प्रदूषण का मूल कारण उद्योगों का विकास है इसलिए लिए इन्हें रोकने का जल्द से जल्द कोई [illegible] सोचना होगा।

Previous Pathshala